बदले-बदले है हुजूर....

कहां गुम हुए उमंग से भरे हौसले
खुशियों से खिलता साथ हमारा
धूमिल होती मदहोश भरी रातें...

इंतजार में टकटकी लगाए पलकें
आशाओं से लदी झूलते पत्ते- बूटे
चाय चुस्की से भरी रूमानी शामें।

गुम हुई है प्रेरक शोखी-ओ-शरारत
रूठने मनाने की बेहतरीन कोशिश
समझ-समझाने वाली तरंगी लहरें

है बदलाव सृष्टि नियम... किन्तु
बदलते रिश्ते खड़े चुनौती अनेक
भावहीन शर्मसार करें गरिमा की
विश्वास स्तम्भ को बस डगमगाए
सोच अन्तर है स्वाभाविक प्रवृत्ति
पर नोक-झोंक का बदलता स्वरूप
करें उल्लंघन हर दांपत्य सूत्रों का

हर दौर की नई जरूरतें व नियम
एक और दशक अनुभव ले आए
जीवन रूपी गाड़ी कभी न रुकें
कभी नहीं बदले- सुख-दुख साथी।

गिरना संभलना ही दांपत्य नियम
हर उतार चढ़ाई से गुजरें है हम
नवरस परिपूर्ण है दांपत्य मधुबनी

इस सफर में अभी
कई पन्ने है लिखना
बाकी.. तुम नहीं
बदलना।

16 नवम्बर 2024